प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 07 सितम्बर। गोरखनाथ मन्दिर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं पुण्यतिथि एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह** के अन्तर्गत **''भारतीय संस्कृति में गो–सेवा का महत्व''** में **मुख्य अतिथि** हरिद्वार से पधारे परमार्थ आश्रम के अध्यक्ष एवं भारत सरकार के पूर्व गृहराज्य मंत्री **स्वामी चिन्मयानन्द जी सरस्वती** ने कहा कि भारत, गंगा, गाय, गायत्री, गीता और गणेश का साधक है। इस पॉच के बिना भारत का कोई भी अनुष्ठान हो ही नही सकता। आज यह सौभाग्य का विषय है कि आजादी के बाद पहली बार देश एवं प्रदेश की सरकार गो सेवा एवं गो रक्षा के लिए संकल्पित दिख रही है। भारत सरकार ने अभी कल ही निर्णय लिया गो रक्षा के लिए हर जिले में पुलिस का एक नोडल अधिकारी होगा। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने गो सेवा आयोग के माध्यम से गो संरक्षण एवं संम्बर्धन का अभियान छेड़ दिया है। ऐसे में जब गो रक्षा का कार्य सरकार कर रही हो तो समाज गो सेवा के अभियान में लगे। गो रक्षा के नाम पर गो भक्तों को बदनाम करने वाले अराजक तत्वों से गो भक्त एवं समाज सावधान रहे। गो रक्षा के नाम पर कानून को हाथ में लेने की छूट किसी को नही दी जा सकती। गो भक्त और भारतीय समाज शासन और सरकार के साथ कन्धा से कन्धा मिलकर गो सेवा के साथ जुड़े। वर्तमान युग में गो सेवा का कार्य गो रक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। सड़को, गलियों में छुट्टा घुमती प्लास्टिक खाती गायों को बचाने हेतु गो पालक आगे बढ़े। उन्होंने आगे कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज भारत को जिस शिखर तक पहुॅचाने के लिए प्रयत्न रहे उनको तप आज फलित हो रहा है। उ0प्र0 की सरकार ने गो सेवा आयोग के माध्यम से प्रदेश में गो रक्षा, गो संरक्षण एंव सम्बर्द्धन का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। महन्त योगी आदित्यनाथ पहले ऐसे सांसद थे जिन्होंने संसद में गो बध पर पूर्ण प्रतिबन्ध का निजी बिल प्रस्तुत किया था। जबकि महात्मा गांधी ने आजादी के पूर्व ही देश को यह वचन दिया था कि आजाद भारत के संसद का पहला प्रस्ताव गो वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध का होगा। महात्मा गांधी की वह इच्छा अब जाकर पूरी हो रही है। योगी आदित्यनाथ जी के मुख्यमंत्री का शपथ लेते ही प्रदेश के अनेक नगरों में रातोरात पशुबध रूक गये, सड़के और गलिया साफ हो गई, प्रदेश में गो शालाओं पर अवैध कब्जे हटने लगे है। जिस प्रकार सूर्य के आगमन पर अंधेरा अपनेआप समाप्त होने लगता है योगी आदित्यनाथ जी के प्रदेश की सत्ता की बागडोर सम्भालते ही अवैध स्लाटर हाउस बन्द हो गए। प्रदेश को इस प्रकार के ऊर्जा एवं बर्चस्व के शासन का नेतृत्व देने का श्रेय इस गोरक्षपीठ को ही है।

उन्होंने आगे कहा कि गो बध क्रूरता की पराकाष्ठा है जबकि गो सेवा करूणा की पराकाष्ठा है। गो एवं गो वंश का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि यदि पूर्वी उ0प्र0 के बच्चें गाय का दूध पी रहे होते तो उनकी मौतों का आकड़ा बहुत कम होता। हम गो सेवा के माध्यम से गो दूध, गो मूत्र की संजीवनी के साथ–साथ जैविक खेती के आधार पर आर्थिक समृद्धि भी प्राप्त कर सकते है। दूध देने अथवा उपयोगी होने मात्र से ही गो सेवा महत्वपूर्ण नही है। दूध न देने वाली गायों अथवा गो वंशो की सेवा भी पुण्य प्रदान करती है। अतः आज प्रदेश एवं देश में गो सेवा को अभियान के रूप में लिये जाने की आवश्यकता है। उ0प्र0 में महन्त योगी आदित्यनाथ जी को ऐसे सनातन मूल्यों की रक्षा के लिए संघर्ष करने वाले योद्धा के रूप में देखा जाना चाहिए। वे मात्र एक मुख्यमंत्री नहीं बल्कि भारतीय सामाजिक परिवर्तन क्रान्ति के मार्गदर्शक है।

उन्होंने कहा कि अपनी सरलता और उपयोगिता के कारण गौ वंश की महत्ता प्रायः सभी सभ्य देशों में न्यूनाधिक रूप से विद्यमान है। भारत जैसे धर्मप्राण एवं कृषि प्रधान देश में तो जननी और जन्मभूमि के समान लोक वंद्य माता के रूप में गौ और गौवंश की महत्ता

अनादिकाल से है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि गौ रूद्रो की माता हैं। गोमाता में तैंतीस करोड़ देवी–देवताओं का हम एक साथ दर्शन करते हैं। गाय हिन्दू–मुसलमान–ईसाई का भेद नहीं करती बल्कि सभी को एक समान मीठा दूध देती है। ऐसी गो माता को देखने की दो दृष्टि है धर्म की दृष्टि से गाय मां है तो धन की दृष्टि से गाय धन है। जब योग की दृष्टि से देखते है तो गाय में ईश्वर का वास दिखाई देता है और जब भोग की दृष्टि से देखते है तो गाय उपयोगी और अनुपयोगी दिखाई देती है। दूध के प्यासो को गो भरण–पोषण करने वाली देवी दिखाई देती है तो खून के प्यासे को गाय एक पशु दिखती है अतः दृष्टि बदलनी होगी। समाज को जागरूक करना होगा।

मुख्य वक्ता गो सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष **श्री राजीव गुप्ता** ने कहा कि गो बध पर प्रतिबन्ध का जो कानून सन् 2002 में बना था वह 15 वर्षों बाद अब लागू हुआ है जब महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में सरकार बनी है। उ0प्र0 में गो सेवा एवं गो रक्षा का अभियान जारी हो चुका है। सामाजिक संस्थाएं आगे आ रही है। उनके सहयोग से हम गो वंश का सम्बर्द्धन एवं संरक्षण करने में तेजी से आगे बढ़ रहे है। परिणामतः छुट्टा गो वंश की संख्या बढ़ी है, सरकार इस दिशा में लोगों को जागरूक कर रही है। किसानों, गो पालकों से हम आग्रह कर रहे है कि वे अपनी गो एवं गो वंश को छुट्टा न छोड़े अपितु सेवा भाव से उनका पालन करें। गो रक्षा का कार्य प्रशासन एवं पुलिस ने सम्भाल रखा है। जनता एवं सामाजिक संस्थाएं गो सेवा एवं गो पालन में सरकार का सहयोग करें। पूरे प्रदेश की तस्वीर बदलेगी। गो वंश प्रकृति के व्यवस्था में पोषण की प्रतीक है। दूध न देने वाली प्रत्यक्ष अनुपयोगी गो वंश की सेवा ही वास्तविक गो सेवा है।

अध्यक्षता करते हुए दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या के **महन्त सुरेशदास जी महाराज** ने कहा कि ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज भारत में गोरक्षा आन्दोलन के अग्रणी नेताओं में एक थे। स्वतंत्रता के बाद से ही गोवंश की हत्या रोकने सम्बन्धी कानून बनाने के लिए धर्माचार्यों ने अनेकों बार अभियान चलाया। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोवध बन्दी को आवश्यक मानने हुए कहा था कि गोरक्षा का प्रश्न मेरे लिए स्वराज्य से भी अधिक महत्वपूर्ण है। ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा था कि यदि गाय नष्ट हो गयी तो भारतीय संस्कृति नष्ट हो जायेगी। अतः श्रीराम–कृष्ण के इस देश में गोवंश की हत्या हमारे लिए शर्म की बात है। उन्होंने आगे कहा कि गोसेवा एवं गो रक्षा केवल कानून बनाने से नहीं होगी इसके लिए समान जनमानस को जागरूक होना पड़ेगा। जिस गाय की हम दूध पीते है उसी को हम वृद्ध होने पर कस्साईयों के हाथ बेच देते हैं। जब तक प्रत्येक हिन्दू व्यक्ति धार्मिक आधार पर गोसंरक्षण के बारे में नही सोचेगा तब तक गोसेवा संभव नही है। गो सेवा एवं गोरक्षा के लिए गोरक्षपीठ प्रारम्भ से ही संकल्पित है। हमें यहॉ से संकल्प लेकर जाना है कि जहॉ तक संभव होगा गो सेवा में अपनी सहभागिता निभायेंगे।

सिद्ध योग पत्रिका के सम्पादक एवं सिद्धगुफा सवाई आगरा के व्यवस्थापक **ब्रह्मचारी दास लाल जी** ने कहा कि धर्मरक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, आर्थिक लाभ और पर्यावरण की दृष्टि से गौ तथा गौवंश का संरक्षण एवं संवर्धन आवश्यक है। हमारे वैदिक ग्रन्थों से लेकर पौराणिक ग्रन्थों तक में गाय की महिमा गायी गयी है। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम गोमाता के प्रति आस्था के प्रश्न के गर्भ से ही उपजा था। भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 1967 में घोषणा की थी कि नवगठित सरकार गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगायेगी। महन्त दिग्विजयनाथ, भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, बाबा राघवदास, स्वामी करपात्री जी, लाला हरदेवसहाय जैसे महापुरूषों के नेतृत्व मं गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध के लिए जन–जागरण एवं आन्दोलन चलाए गये। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति यज्ञ की संस्कृति हैं। गोमूत्र, गोदूध, गोबर, गोघृत आदि के बिना पंचामृत एवं यज्ञ की कल्पना ही नहीं की जा सकती। गोमाता हमारी यज्ञ संस्कृति की प्रतीक है। ये हमारे सामाजिक–आर्थिक–धार्मिक जीवन की धुरी है। भारत का बोध वाक्य रहा 'भारत देश से नाता है गो हमारी माता है' ऐसे देश में गौ वंश की हत्या महापाप है। गौ धन की रक्षा का संलल्प देश की वर्तमान आवश्यकता है।

अरैल प्रयाग से पधारे स्वामी गोपाल जी महाराज ने कहा कि जिस गौ को हम माता मानते है, कृषि प्रधान देश में हमारे आर्थिक संरचना की जो रीढ़ है, उसी गोवंश का अस्तित्व ही जिस प्रकार आज खतरे मे है वो भारत के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है और चिंता का विषय है। गोमाता की सेवा के बगैर लोक–परलोक दोनों जीवन अधूरा है। गोमाता सनातन अस्मिता की प्रतीक है। योगी आदित्यनाथ जी महाराज संसद में गोवंश के रक्षा की लड़ाई लड़ते है, यह गोरखपुर के लिए सौभाग्य की बात है। हम भी लोकचेतना को जाग्रित करें और गोसेवा का व्रत ले।

पुण्यतिथि समारोह में आज

युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत कल **08 सितम्बर,2017** को प्रातः 10.30 बजे **'शिक्षा और स्वास्थ्य : सेवा भी–धर्म भी'** विषयक संगोष्ठी
मुख्य अतिथि – श्री दिनेश शर्मा जी, माननीय उपमुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री, उ0प्र0
अपराह्न 3.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा' का आयोजन।**

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं पूर्व कुलपति प्रो0 यू0पी0सिंह ने कहा कि जनजागरण एवं जनसंघर्ष के बिना गोरक्षा का अभियान पूरा नहीं होगा। सर्वमयी गौ हमारे लिए वरदायिनी है। उन्होनें कहा समुद्र मन्थन के फलस्वरूप उत्पन्न 14 रत्नों में 'सुरभि' अर्थात गौ भी थी। गायों को तीनो लोकों की माता कहा गया है। पुण्यकामी गृहस्थ जनों को गौ सेवा करनी चाहिए। जो गौ सेवा परायण होता है उसकी श्री वृद्धि शीघ्र होती है। भविष्य पुराण में कहा गया है गौ की पीठ में ब्रम्ह, गले में विष्णु, मुख में रूद्र प्रतिष्ठित है। भारत में प्रतिवर्ष गोबर आदि जैविक खाद के अभाव में लगभग 6 से 7 प्रतिशत भूमि बंजर होती जा रही है। ऐसे में गो और गोवंश की उपयोगिता हमारे कृषि कार्य हेतु अपरिहार्य बनती जा रही है। धर्म और आध्यात्म के साथ–साथ आर्थिक स्वावलम्बन के लिए भी गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध देश की आवश्यकता है। यदि मानव की रक्षा करनी है तो गो और गंगा की रक्षा करनी होगी।

गोसेवक एवं पूर्व पशुधन प्रसार अधिकारी वरुण कुमार वैरागी ने गो रक्षा पर कविता का पाठ किया। समारोह का शुभारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी को पुष्पांजलि, वैदिक मंगलाचरण एवं गोरक्षाष्टक पाठ के साथ हुआ। दिग्विजयनाथ पी0जी0 कालेज, गोरखपुर एवं दिग्विजयनाथ एल0टी0 प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर एवं प्रताप आश्रम एवं श्रीगोरखनाथ संस्कृत विद्यापीठ, गोरखपुर के प्राचार्य, प्रधानाचार्यो एवं शिक्षकों ने माल्यार्पण के साथ अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 राजशरण शाही एवं आभार प्राचार्य डॉ0 शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने किया।

कार्यक्रम में श्री रामतीरथदास जी, श्री रामशंकरदास जी, महन्त शान्तिनाथ जी, योगी कमलनाथ, महन्त मिथलेशनाथ जी, महन्त रविन्द्रदास जी, महन्त प्रेमदास जी, महन्त राममिलनदास जी, पंचाननपुरी, डॉ0 के0पी0सिंह, उपेन्द्रधर द्विवेदी आदि उपस्थित थे।

संगोष्ठी – "भारतीय संस्कृति में गो-सेवा का महत्व"